"संस्कार जागृति मिशन" को समर्पित

!! ओ३म् !!

अंक–04 वर्ष–01, जुलाई 2019 (मासिक)

एक कदम संस्कारों की ओर

# संस्कार जागृति

मासिक डिजीटल (ऑन लाइन) पत्रिका

बच्चों को करें संस्कारों से सिंचित : डा.अर्चना प्रिय आर्य

# संस्कार जागृति

''संस्काराद् द्विज उच्यते''

(संस्कारों से परिष्कृत मनुष्य ही द्विज कहलाते हैं)

(भारतीय संस्कृति व संस्कारों को पुनः जागृत करने में अहम भूमिका निभा रही संस्था 'संस्कार जागृति मिशन' को समर्पित डिजीटल पत्रिका)

अंक-04 वर्ष-01, संवत्सर 2076 जुलाई 2019 (मासिक)

**मार्गदर्शक**
आचार्य सत्यप्रिय आर्य
डा.अर्चना प्रिय आर्य

**संपादक**
विवेक प्रिय आर्य

**सृष्टि संवत्**
1960853120

**कार्यालय**
संस्कार जागृति मिशन
52, ताराधाम कॉलोनी
नियर पुष्पांजलि द्वारिका
टाउनशिप (मथुरा) उ.प्र.

**दूरभाष**
09719910557
09719601088
09058860992

## अनुक्रमणिका

| लेख-कविता | पृष्ठ संख्या |
|---|---|
| वेदवाणी | 03 |
| सम्पादकीय | 04 |
| बच्चों को संस्कारों से सिंचित करो | 05-06 |
| कवि की कलम से | 06 |
| मजबून भांत लेते हैं लिफाफा देख कर | 07-08 |
| सफल वही होता है जिसका लक्ष्य होता है | 09 |
| सौंदर्य चर्चा (खीरे से आयेगी चहरे पर चमक) | 10 |
| स्वास्थ्य चर्चा (पेट दर्द के घरेलू उपाय | 10 |
| संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां | 11-14 |
| संस्कार जागृति मिशन का साहित्य | 15 |

'संस्कार जागृति' पत्रिका प्राप्त करने के लिए

अपनी ई-मेल आईडी व व्हाट्सएप नम्बर हमें भेजें........09719910557

# वेद वाणी

## प्राणों से प्यारे! हमारा सदैव कल्याण करो

### वेद मंत्र

ओ३म् यदुङ्ग दाशुषे त्वमग्रें भद्रं करिष्यसि। तवेत्तत् सत्यमङ्गिरः।।

-ऋ० १।१।६।

ऋषिः-**मधुच्छन्दाः**।। देवता-**अग्निः**।। छन्दः-**गायत्री**।।

### विनय

हे प्रकाशमय देव! यह सच है कि स्वार्थत्यागी का कल्याण ही होता है, परंतु संसार में ऐसा दिखाई नहीं देता। संसार में तो दीखता है कि स्वार्थमग्रं लोग ही आनंद-मौज उड़ा रहे हैं और स्वार्थत्यागी दुःख भोग रहे हैं। स्वार्थी विजय-पर-विजय पा रहे हैं, दूसरों पर अत्याचार कर रहे हैं और स्वार्थत्यागी पुरूष सताये जा रहे हैं, परंतु हे मेरे प्यारे देव! हे मेरे जीवनसार! आज मैं तेरी परम कृपा से सूर्य की भांति यह स्पष्ट देख रहा हूं कि आत्म-बलिदान करने वाले का तो सदा कल्याण ही होता है। इसमें कुछ संशय नहीं रहा, यह अटल है, बिल्कुल स्पष्ट है। संसार की ये प्रतिदिन की उलटी दिखाई देने वाली घटनाएं भी आज मेरी खुली आंखों के सामने इस प्रकाशमान सत्य को छिपा नहीं सकतीं कि आत्मसमर्पण करने वाले के लिए कल्याण-ही-कल्याण है। मैं दखता हूं कि संसार में चाहे कभी सूर्य टल जाए, ऋतुएं बदल जाएं, पृथिवी उलटी घूमने लग जाए और सब असम्भव सम्भव हो जाए, परन्तु तेरा यह सत्य अटल है कि आत्म-बलिदान करने वाले का अकल्याण कभी नहीं हो सकता- **''नहि कल्याणकृत् कश्चिद् दुर्गतिं तात गच्छति''** (''हे प्यारे! कल्याण करने वाला कभी दुर्गति को नहीं प्राप्त होता'')- कृष्ण भगवान् के गाये हुए ये सान्त्वनामय शब्द परम सच्चे हैं।

हे जीवन-के-जीवन! जब मनुष्य स्वार्थ को त्यागता है, आत्म-बलिदान करता है तो उस त्याग व बलिदान द्वारा हे कल्याणस्वरूप! वह केवल तेरे और अपने बीच की रूकावट का ही त्याग करता है, निवारण करता है और तेरे कल्याणस्वरूप को पाता है। भला, आत्म-बलिदान में अकल्याण का अवकाश ही कहां है? सचमुच, स्वार्थशून्य पवित्र पुरूषों पर आये हुए कष्ट, दुःख, आपात् सब क्षणिक होते हैं। उनके सम्बन्ध में जो अक्षणिक है, सत्य है, अटल है, वह तो उनका कल्याण है।

### शब्दार्थ

**अङ्ग**- हे प्यारे! **अङ्गिरः**- मेरे जीवनसार **अग्रें**- प्रकाशकदेव! **यत् त्वम्**- जो तू
**दाशुषे**- आत्म-बलिदान करने वाले का **भद्रम्**- कल्याण **करिष्यसि**- करता है
**तत्**- वह **तव**- तेरा **सत्यं इत्**- सच्चा, न टलने वाला नियम है।

**('आचार्य अभयदेव जी' की पुस्तक 'वैदिक विनय' से)**

''सस्कार जागृति मिशन'' से जुड़कर अपने बच्चों को संस्कारित करें। सम्पर्क करें : 09719910557

# संपादकीय

## 'धूम्रपान' यानी खतरे में जान

विवेक प्रिय आर्य
(सम्पादक)

धूम्रपान का शौक प्रौढों को ही नहीं, किशोरों और युवकों में भी बड़ी तेजी से बढ़ रहा है। सिगरेट की हर पैकट पर एक वैधानिक चेतावनी लिखी जाने लगी है - ''सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है'', मगर सिगरेट के शौकीनों की दृष्टि में यह चेतावनी अर्थहीन है। आज संसार भर के चिकित्सा-वैज्ञानिक गला फाड़-फाड़कर कह रहे हैं कि धूम्रपान हृदय रोग, कैंसर और उक्त रक्तचाप का जनक है, मगर उनकी आवाज कौन सुनता है? सिगरेट-बीड़ी वाली कम्पनियां करोड़ों का मुनाफा कमा रही हैं और धूम्रपान के प्रचार पर पानी की तरह पैसा बह रहा है। धूम्रपान स्वास्थ्य और जीवन को नष्ट कर देने वाला प्राण घातक कुव्यसन है। इसकी भयानकता प्रकट करने वाले तथ्य हमें चौंका देते हैं। एक सिगार में इतना काफी 'निकोटिन' यानी विष होता है कि यदि उसे इंजेक्शन द्वारा खून में पहुंचा दिया जाए तो वह दो लोगों को मार देगा। अब यह सिद्ध हो चुका है कि धूम्रपान के द्वारा जो विभिन्न प्रकार के अलकतरे और निकोटीन प्रवेश करते हैं, उनका श्वांस की नली और फेंफड़ों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। सिगरेट उद्योग को बचाने के लिए यह तर्क पेश किया गया कि सिगरेट में फिल्टर लगा देने से धुंआ हानिकारक नहीं रहा जाता। ऐसी दलीलें लोगों को सिर्फ गुमराह करती हैं। धूम्रपान स्वास्थ्य का कट्टर शत्रु और प्राण घातक है, यह नग्न सत्य है।

### लेक सिटी के सुप्रसिद्ध अमेरिकन डा.स्पेन्स की चेतावनी :-

बीड़ी-सिगरेट के धुंए में रहा निकोटीन घातक विष और चिकना तारकोल फेंफड़ों में जमा हो जाता है। इसी कारण धूम्रपान से फेंफड़ों में कैंसर जैसा असाध्य रोग पैदा होता है। यह एक पौण्ड तम्बाकू में 380

ग्रेन पाया जाता है। एक सिगरेट-बीड़ी पीने से निकोटीन विष 1 से 5 मि. ग्राम तक खून में मिलता है। यह इतना भयंकर विष होता है कि इस की 1/10 ग्रेन से कुत्ता 3 मिनट में मर जाता है। खालिस निकोटीन की एक बूंद से काला नाग फौरन मर जाता है तथा खरगोश 3 मिनट में व बिल्ली और मनुष्य 5 मिनट में मर जाते हैं। तम्बाकू में रहे निकोटीन विष के सिवाय और भी अन्य 24 प्रकार के घातक विष जैसे कार्बन मोनोक्साइड़, मिथेन, अमोनिया, फिनश्वल्स, हाइडोजन साइनाइड़, डी.डी.टी., निवाइल क्लोराड़, नॅप्थश्वलिन, इथॅनाल आदि बेहद खतरनाक विष पाये गए हैं जिनके कारण धूम्रपान से खांसी, दमा, टी.बी., सांस रोग, हार्ट अटैक, आंख कमजोर, पाचन शक्ति बर्बाद, आन्तों में खुष्की, जिगर खराब, अनिद्रा, कब्ज आदि सैकड़ों भंयकर रोग पैदा होते हैं और अन्त में खून का पानी बन जाता है।

**विनम्र निवेदन :- धूम्रपान के कुव्यसन से छुटकारा पाने का एक मात्र उपाय है दृढ़ निश्चय। धूम्रपान की इच्छा का दृढ़ता से दमन करें और इसकी लत भूलकर भी न लगने दें। अतः स्वाध्य प्राप्ति के लिए धूम्रपान छोड़ दें।**

विवेक प्रिय आर्य

(विवेक प्रिय आर्य)

सम्पादक : संस्कार जागृति (डिजीटल पत्रिका)

# बच्चों को संस्कारों से सिंचित करो

लेखिका : डा. अर्चना प्रिय आर्य, अध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन

डॉ० अर्चना प्रिय आर्य
(वैदिक प्रवक्ता)

माताओं संस्कार, समर्पण, वात्सल्य और स्वाभिमान तुम्हारे ये चार आभूषण हैं, जिसे धारण करके तुम चार रूपों में हमारे सामने आती हो- पुत्री, पत्नी, मॉ और स्त्री। पुत्री के रूप में संस्कार ग्रहण करती हो, पत्नी के रूप में समर्पित होती हो, मां के रूप में ममत्व और वात्सल्य हो और स्त्री बनकर अपने स्वाभिमान की रक्षा करती हो। तुम्हारे ये चारों रूप जब मॉ में समाहित हो जाते हैं, तब कुछ भी शेष नहीं बचता, केवल वह मॉ रह जाती है जिसका जीवन भी शिशु है और धर्म भी शिशु ही है। मॉ और ममता के अतिरिक्त कुछ भी शेष नहीं बचता। माता की अपेक्षा पिता की भूमिका बहुत छोटी होती है। बीजांकुर जैसे अन्धकार में पलता, फुटता है उसी प्रकार गर्भ के गहन अंधकार में सन्तान का सृजन होता है। माता की भूमिका ही विशाल और व्यापक होती है। मदालसा ने अपनी लोरी में अपने पुत्रों को ब्रह्ममज्ञान दिया था-

**शुद्धोऽसि, बुद्धोऽसि, निंरज्जनोऽसि, संसार माया परिवर्जितोऽसि।**
**संसार स्वप्नं त्यज मोह निद्रा मंदालसा वाम्यमुवाचपुत्रम्।।**

तुमने देश को भगत सिंह जैसा बलिदानी पुत्र दिया, चन्द्रशेखर आजाद जैसा योद्धा पुत्र दिया और तुमने वीर सावरकार जैसे स्वातंत्रचेता पुत्र को मातृभूमि के चरणों में अर्पित किया। तुम सरदार वल्लभ भाई पटेल जैसे स्वतन्त्रता सेनानियों की मॉ हों। तुम्हारे बिना कोई सृष्टि या राष्ट्र की कल्पना कर सकता है क्या? हे मॉ ममता, करूणा, वात्सल्य से भरा अपना शाश्वत मातृत्व का रूप सारे विश्व के सन्मुख प्रस्तुत करो। जब बेटी ऐसे संस्कारों को अपनी मॉ से लेकर स्वयं भी मॉ बनती है तब उसके बच्चे भी वही संस्कार ग्रहण करते हैं। वैसे ही मॉ के मन से जुडे रहते हैं। वर्तमानकालीन की तरह नहीं कि माता-पिता बोझ प्रतीत होने लगे और उन्हें घर से ही नहीं दिलों से भी दूध की मक्खी की तरह निकालकर बाहर फेंक दिया जाता है। इसमें बच्चों का दोष नहीं, दोष संस्कारों की उपेक्षा का है। जन्म से ही आया की गोद में पलने वाले बच्चे, मॉ-बाप के प्यार से वंचित बच्चे, क्या जानें प्यार क्या होता है? ममता क्या होती है? उनके हद्य की रिक्तता आज के बूढ़े माता-पिता की ही देन है। तब वे व्यस्त थे, आज ये व्यस्त हैं। जो रिक्तता उन्होने पाई वही वे बांट रहे हैं। उनका मन प्यार से लबालब भरा कटोरा होता तो वह अवश्य छलकता। इसलिये अपने बच्चों को संस्कारी बनाओ। प्यार की डोर में घर-परिवार को बॉधो, तब तुम समर्पित संस्कारित बच्चों की मॉ-बाप बन पाओगे। अपनी सन्तानों की कमजोरी नहीं ताकत बनो। अपनी सन्तान को धरती सी धैर्यवान, वृक्षों सी फलदायिनी, गंगा की कलकल करती धारा बनाओ, जिसमें स्नान करके कुलतर जाए। तुम्हारी पुत्री कुल कलंकिनी नहीं कुलवन्ती कहलाए। पूजा की थाली की तरह कुमकुम हल्दी से सजी, संस्कारों के आभूषणों से आभूषित तुम्हारी पुत्री जब किसी घर की बहू बनेगी, किसी की पत्नी बनेगी, किसी की मॉ बनेगी तो भला कैसे नहीं भारतीय संस्कृति की बेल फलेगी। पुत्रों को दृढ़ निश्चयी, निष्ठावान, चरित्रवान, देशभक्ति बनाओ। अपनी लोरी में ही उन्हे धर्मज्ञान का पाठ पढ़ा दो ताकि वे कभी धर्मपथ से विचलित ही न हों। लेकिन यह सब तभी संभव है जब तुम स्वयं सुसंस्कृत होगीं। यदि तुम चाहती हो कि बच्चे तुम्हारी आज्ञा का पालन करे तो बच्चों को संस्कारों से सिचिंत करो, धर्म से सिंचित करो। प्रातः उन्हे जल्दी जगाओ क्योकि प्रातः चार बजे आकाश से अमृत की वर्षा होती है, जीवन को ऊर्जा मिलती है, चैतन्यता मिलती है ........................................................(शेष पेज 06 पर)

## कवि की कलम से

# 'कंगाल' की कुगति

रचियता
महाकवि
श्री नाथूराम शर्मा 'शंकर'
(शंकर – सर्वस्व से साभार)

कंगाली में कंगाल के,
सब ढंग बिगड़ जाते हैं।

जिसके दिन बोदे आते हैं, सुखप्रद भोग भाग जाते हैं,
संशय नोच-नोच खाते हैं, उस कुलीन कुलपाल के-
शुभ लक्षण झड़ जाते हैं।

घर के घोर कष्ट सहते हैं, भूखे रोष-भरे रहते हैं,
कहनी-अनकहनी कहते हैं, मुखिया जी बिन माल के-
सकुचाय सिकुड़ जाते हैं।

प्यारे प्यार नहीं करते हैं, मित्र मांगने से डरते हैं,
नातेदार नाम धरते हैं, कब तब रोटी-दाल के-
जब लाले पड़ जाते हैं।

दूर न दीन दशा होती है, लघुता लोक-लाज खोती है,
प्रतिभा सुधि बिहाय रोती है, 'शंकर' धर्म-मराल के-
जब पंख उखड़ जाते हैं।

पृष्ठ 05 का शेष....

## बच्चों को संस्कारों से सिंचित करो (लेखका : डा.अर्चना प्रिय आर्य)

...........उदित होते हुए भुवन भास्कर के दर्शन करों ताकि तुम तेजस्विता को अर्जित कर सको, ओज अर्जित कर सको। नित्य अपने बच्चों को सूर्यदेव का दर्शन कराओ। वही प्राणों का प्राण है, प्राणियों के जीवन का आधार है। अगर तुमने अपने बच्चों को भुवन भास्कर का दर्शन कराया होता तो वह भी तेज से, ओज से परिपूर्ण होते। परन्तु वर्तमान समय में आप अपने बच्चों को जिस पाश्चात्य सभ्यता के रंग में रंग रही हो, उसका दुष्परिणाम आज हमारे सामने है। जब तुम उससे यह कहोगी कि बेटा मैनें तुम्हारे लिये कष्ट सहे, नौ महीने पेट में रखा तो वह पेंट की जेब से नोंटो की गड्डी निकालकर तुम्हारे मुँह पर फेकेंगा कि लो मम्मी किराया नौ महीने का नहीं पूरे साल का काट लो पर मुझे ऋणी मत कहो। जो बच्चा तुम्हारे प्रतिकृतज्ञता व्यक्त नहीं कर पाता वह मातृभूमि के प्रति कैसे कृतज्ञता व्यक्त कर पाएगा। यह संस्कार कौन देगा? आप देंगी। हमारी परम्परा है बड़ों के चरणों पर सिर रखकर आशीर्वाद लेने की। जब प्रणाम की भूमि पर हम प्रणिपात करते हैं तब आशीर्वादों की फसल पैदा होती है।

अर्चना प्रियार्य
(डा.अर्चना प्रिय आर्य)
एम.ए. (संस्कृत/हिन्दी), पी.एच.डी. (संस्कृत)
संस्थापक अध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन

आपके विचार व सुझाव आमंत्रित हैं
प्रिय साथियों आप भी अपने सुझाव, विचार, लेख, कविता, स्वास्थ्य चर्चा हमें भेज सकते हैं, जिन्हें हम अपने अगले अंक में प्रकाशित कर सकें। हमें आपकी प्रतीक्षा रहेगी।
E-Mail : sanskarjagratimission@gmail.com 09719910557

# "मजबून भांप लेते हैं लिफाफा देख कर"

## लेखक : आचार्य सत्यप्रिय आर्य, संरक्षक : संस्कार जागृति मिशन

आचार्य सत्यप्रिय आर्य
सम्पर्क : 09719601088

प्रातः काल की बेला में एक महात्मा ईश्वर कृपा का अनुभव करते हुए भ्रमण कर रहे थे। देखा गया है कि प्रातःकाल की बेला में बुरे से बुरे व्यक्ति का भी मन शांत होता है, चंचल से चंचल व्यक्ति का भी मन एकाग्र होता है, महात्मा देखते हैं कि रास्ते में दो व्यक्ति किसी बात को लेकर आपस में विवाद कर रहे हैं, झगड़ा कर रहे हैं। व्यक्ति के झगड़े का कोई समय निश्चित नहीं होता है गाड़ी के चलने का समय है, मौसम का समय है, हवाई जहाज के चलने का समय है लेकिन व्यक्ति के झगड़े का कोई समय नहीं है किस समय किस बात पर व्यक्ति कहां उलझ जाए उसको स्वयं पता नहीं। महात्मा ने उन व्यक्तियों को देख कर के सोचा कि यह भगवान को याद करने का समय है लेकिन ये अभागे ऐसे हैं कि आपस में ही लड़ रहे हैं। महात्मा ने विचार किया कि चलकर पूछूं तो सही कि इनकी लड़ाई क्या है? महात्मा पास गए तो देखा कि इन दोनों व्यक्तियों के बीच में एक छोटा सा चमकीला पत्थर पड़ा है और उस पत्थर को लेकर दोनों लड़ रहे हैं, क्योंकि वह पत्थर हीरा है। सारे पत्थर एक जैसे नहीं होते हमने अपनी इच्छाओं के अनुसार बहुत सी चीजों के नाम अपने ढंग से रख लिए हैं हालांकि हीरे के ऊपर भगवान ने हीरा लिखा नहीं है लेकिन यह हीरा बहुत मेहनत से मिलता है इसलिए उसे हीरा माना हुआ है, सोने के ऊपर सोना लिखा नहीं है भगवान ने लेकिन हमने उसे सोना मान लिया है, चांदी के ऊपर चांदी लिखी नहीं है परंतु हमने उसे चांदी मान लिया है- यह हमारी मान्यता है क्योंकि हर व्यक्ति दुनिया में अपनी मान्यता के लिए जी रहा है और फिर वही मान्यता व्यक्ति के परिवार के लिए हो जाती है, परिवार की मान्यता समाज की मान्यता और समाज की मान्यता राष्ट्र की और राष्ट्र की विश्व की इस तरह से आप की स्थिति बनती है और व्यक्ति के लिए वह यथार्थ होती है। भगवान की दृष्टि में सारे पत्थर-पत्थर हैं। एक पत्थर ज्यादा जमीन की गहराई में चला गया है अधिक गर्मी में आ गया है तो उसने ज्यादा तपस्या कर ली तो ज्यादा चमकीला हो गया वही पत्थर लाखों वर्ष तक जब धरती की गहराई में तपता है तो वही हीरा बनता है। झगड़े का कारण जानकर दुख हुआ क्योंकि कारण भी बहुत छोटा सा है और अनित्य है। लेकिन इन दो व्यक्तियों को यह ख्याल नहीं है कि सुबह का समय इससे भी अधिक हीरे बटोरने का है, भगवान का नाम कमाने का समय है, आत्मा को प्रभु के चरणों में लगाने का समय है लेकिन अभागे व्यक्तियों को इस बात का ज्ञान नहीं है। महात्मा ने सोचा शायद यह दोनों व्यक्ति गरीब हैं इसलिए बेचारे इस हीरे के लिए लालायित हों लेकिन पता चला कि उनके तो साइड से दोनों की गाड़ी खड़ी हैं और उनके ड्राइवर गाड़ियों में बैठे उनका इंतजार कर रहे हैं और वह लड़ रहे हैं। उनकी लड़ाई की गर्मी इतनी तेज थी कि सोचा कि बीच में तो पड़ना लड़ाई को बढ़ाने वाली बात हो जाएगी तो महात्मा ने सोचा कि इस जगत के अंदर तरह-तरह की प्रवृत्तियां काम करती हैं। अब मैं इनकी प्रवृत्ति को देखूं कि ये अब करते क्या हैं? तो महात्मा कहते हैं कि उनमें से एक व्यक्ति कहता है कि इस हीरे पर पहले मेरी नजर पड़ी है इसलिए इसका मालिक मैं हूं और दूसरा कहता है कि नहीं नजर मेरी पहले पड़ी है इसलिए मेरा है। यह बड़ी विचित्र बात है कि उनका फैसला कौन करे कि नजर पहले किसकी पड़ी?

एक बात का आपको यहां ध्यान देना है कि दुनिया में आपके पास जो भी चीज है वह आपने बनाई नहीं केवल उस पर आप की नजर पड़ी है और नजर पड़ी हुई चीजों को अपनी मानकर, अपने को उसका स्वामी मानकर दुनियां परेशान है। गीता हमें समझाती है कि इस संसार में जो कुछ भी है उसके तुम वास्तविकता में स्वामी नहीं हो, केवल उन चीजों पर तुम्हारी नजर पड़ी है और.......................................... (शेष पेज 08 पर))

पृष्ठ 07 का शेष....

## ''मजबून भांप लेते हैं लिफाफा देख कर'' (लेखक : आचार्य सत्यप्रिय आर्य)

..........तुम्हें यह चीजें अच्छी लगी हैं और तुम उनके स्वामी बन गए हो। गीता का अभ्यास करने वाले साधक को अपने मन की रीडिंग करनी होगी कि जिन-जिन चीजों पर मन दृष्टि डालकर अपने को मालिक बना रहा है क्योंकि मालिक होने का जो मजा है, वस्तु की आवश्यकता है या नहीं यह बात कोई नहीं लेकिन मालिक होने का मजा लेना चाहते हैं। गीता तत्व जो हमें समझाती है उसे समझने के लिए व्यक्ति को जीवन यथार्थ दृष्टि से देखना होगा। ऐसा नहीं कहा जा रहा कि तुम्हारी जो चीजें हैं उसे छोड़ो परंतु यह कहा जा रहा है कि तुम्हारी चीज है ही नहीं परंतु तुमने उसे अपनी मान लिया है। बस इसे छोड़ो हमारा यह जो शरीर है वह भी हमारा नहीं, इसे किसी ने बनाया है और जिस काम के लिए बनाया है उससे वही काम लो, उसके ऊपर से कर्ता भाव को हटा दो, वास्तविकता में तुम उसके कर्ता हो ही नहीं। हमारे हिंदू धर्म में अकर्मण्यता आ गई है कि भक्ति करने का अर्थ है कि शरीर से काम करना छोड़ दो। राजे महाराजे अपने हथियार छोड़कर नकली भक्ति के फेर में माला लेकर बैठ गए और विधर्मी लोग बाहर से आए जिनकी दृष्टि में भगवान कोई चीज नहीं था, धन दौलत ही सब कुछ था और हमारे यहां के हीरे-मोती-सोना-चांदी से युक्त मंदिरों को लूटा, हमारे माने हुए भगवानों को तोड़ दिया, फोड़ दिया। यह सब हमारी भक्ति को न समझने के कारण हुआ और अकर्मण्यता के कारण हुआ। इसलिए इस संसार का आप उपभोग-उपयोग करो तो त्याग भावना से करो। भगवान की भक्ति करो तो राग के लिए करना क्योंकि प्रातव्य तो भगवान हैं, संसार तो व्यवहार है, व्यवहार किया और संसार चला गया। जैसे आप रास्ते में जा रहे हैं बच्चे ने कहा पिताजी चिप्स ले लो और आपने चिप्स ले लिया खाने के बाद लिफाफा फेंक दिया क्योंकि उसका कोई मतलब नहीं कि उसको रखा जाए। इसी तरह यह संसार व्यवहार है समय-समय पर ही प्रयोग किया और छोड़ दिया। आपको हर चीज में भगवान को देखना है लिफाफे को नहीं देखना है, चिट्ठी को देखना है क्योंकि कहा गया है-

**''मजबून भांप लेते हैं लिफाफा देख कर''**

यह जो बाहर शरीर रूपी लिफाफा है कोई स्त्री है, कोई पुरुष है, कोई धनी है, कोई निर्धन है, कोई काला है, कोई गोरा है परंतु सबके भीतर मजबून तो वही आत्मा है, वही भगवान हैं। ऐसा भाव जब व्यक्ति के अंदर आ जाता है तो वह समदर्शी गीता के अनुसार हो जाता है और फिर उसे ''**तत्र कः मोहः कः शोकः एकत्व मनुपश्यति**'' की अनुभूति होने लगती है। बस यही बात पैदा करना भक्ति है, पूजा है, आराधना है, उपासना है, ईश्वर मिलन है। अपने अंदर देखने से वह दृष्टिगोचर होता है।

**तेरा प्रीतम है घट मांही, बाहर आंखें क्यों खोले।**
**कहत कबीर सुनो रे साधो, प्रीतम मिल गए तिल ओले**

**आचार्य सत्यप्रिय आर्य**

एम.ए. (संस्कृत), शिक्षा शास्त्री, विद्यावाचस्पति, नीति-भूषण

पूर्व प्रधान : आर्य प्रतिनिधि सभा, मथुरा / ग्राम पंचायत सुसाइन

**संस्कार जागृति मिशन** का पावन उद्देश्य अनवरत जन-जन तक पहुंच सके इसके लिए हम संस्कारित विचारों एवं पवित्र मन से समर्पित होकर मानव सेवा के इस कार्य में अपनी सामर्थ्य के अनुसार अधिक से अधिक सहयोग कर इस पवित्र कार्य में सहभागी होंगे। मिशन का आगामी लक्ष्य ''संस्कार जागृति संस्थान'' बनाने का है, जिसमें संस्कार विहीन बच्चों को संस्कारित कर भारतीय संस्कृति व संस्कारों के प्रति प्रहरी बनाना है। जिससे संस्कारित समाज का निर्माण संभव हो। सम्पर्क सूत्र : 09719910557

# प्रेरक प्रसंग | सफल वही होता है, जिसका लक्ष्य होता है

वंदना प्रिय आर्य
एम.ए., एम.फिल. (संस्कृत)
उपाध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन

एक बार की बात है, एक नि:संतान राजा था, वह बूढा हो चुका था और उसे राज्य के लिए एक योग्य उत्तराधिकारी की चिंता सताने लगी थी। योग्य उत्तराधिकारी के खोज के लिए राजा ने पुरे राज्य में ढिढोरा पिटवाया कि अमुक दिन शाम को जो मुझसे मिलने आएगा, उसे मैं अपने राज्य का एक हिस्सा दूंगा। राजा के इस निर्णय से राज्य के प्रधानमंत्री ने रोष जताते हुए राजा से कहा, ''महाराज, आपसे मिलने तो बहुत से लोग आएंगे और यदि सभी को उनका भाग देंगे तो राज्य के टुकड़े-टुकड़े हो जाएंगे। ऐसा अव्यावहारिक काम न करें।" राजा ने प्रधानमंत्री को आश्वस्त करते हुए कहा, ''प्रधानमंत्री जी, आप चिंता न करें, देखते रहें, क्या होता है।''

निश्चित दिन जब सबको मिलना था, राजमहल के बगीचे में राजा ने एक विशाल मेले का आयोजन किया। मेले में नाच-गाने और शराब की महफिल जमी थी, खाने के लिए अनेक स्वादिष्ट पदार्थ थे। मेले में कई खेल भी हो रहे थे। राजा से मिलने आने वाले कितने ही लोग नाच-गाने में अटक गए, कितने ही सुरा-सुंदरी में, कितने ही आश्चर्यजनक खेलों में मशगूल हो गए तथा कितने ही खाने-पीने, घूमने-फिरने के आनंद में डूब गए। इस तरह समय बीतने लगा। पर इन सभी के बीच एक व्यक्ति ऐसा भी था जिसने किसी चीज की तरफ देखा भी नहीं, क्योंकि उसके मन में निश्चित ध्येय था कि उसे राजा से मिलना ही है। इसलिए वह बगीचा पार करके राजमहल के दरवाजे पर पहुंच गया। पर वहां खुली तलवार लेकर दो चौकीदार खड़े थे। उन्होंने उसे रोका। उनके रोकने को अनदेखा करके और चौकीदारों को धक्का मारकर वह दौड़कर राजमहल में चला गया, क्योंकि वह निश्चित समय पर राजा से मिलना चाहता था। जैसे ही वह अंदर पहुंचा, राजा उसे सामने ही मिल गए और उन्होंने कहा, 'मेरे राज्य में कोई व्यक्ति तो ऐसा मिला जो किसी प्रलोभन में फंसे बिना अपने ध्येय तक पहुंच सका। तुम्हें मैं आधा नहीं पूरा राजपाट दूंगा। तुम मेरे उत्तराधिकारी बनोगे।'

सफल वही होता है जो लक्ष्य का निर्धारण करता है, उस पर अडिग रहता है, रास्ते में आने वाली हर कठिनाइयों का डटकर सामना करता है और छोटी-छोटी कठिनाईयों को नजरअंदाज कर देता है।

ओजस्वी प्रवक्ता एवं मधुर गायिका
श्रद्धेया डा.अर्चना प्रिय आर्य जी
(अध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन)
की अमृतमयी वाणी में
मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम कथा, भगवती सीता चरित
यज्ञ कथा, राष्ट्र कथा एवं आर्य भजनोपदेश
कराने के लिए सम्पर्क करें : 09719910557, 09719601088

''सस्कार जागृति मिशन'' से जुड़कर अपने बच्चों को संस्कारित करें। सम्पर्क करें : 09719910557

# सौंदर्य चर्चा

# खीरे से आयेगी चहरे पर चमक

नीति प्रिय आर्य
(सौंदर्य विशेषज्ञ)

खीरे का प्रयोग चाहे आप खाकर करें या फिर चेहरे पर लगाकर, यह आपकी त्वचा के लिए काफी लाभदायक साबित होता है। ब्यूटी पार्लर जाकर खर्चा करने की बजाय घर में बिना किसी पैसे के खीरे के फेस पैक का निर्माण करना ज्यादा अच्छा साबित होगा। गर्मियों में खीरे का प्रयोग त्वचा पर करने पर यह काफी अच्छा प्रभाव छोड़ता है। खीरा लगाने से आपका चेहरा खूबसूरत होने के साथ-साथ तेजयुक्त भी रहेगा। इसके अलावा स्किन को टाइट करना हो तो भी खीरा या उससे बना फेस पैक बहुत लाभदायक होता है। अगर खीरे से बना स्क्रबर प्रयोग किया जाए तो चेहरे पर पड़े ब्लैकहेड और आंखों के नीचे डार्क सर्कल भी दूर किया जा सकता है। खीरे से बने फेसपेक (जो आपकी त्वचा को सुन्दर बनाये रखें) के बारे में बता रहीं हैं सौंदर्य विशेषज्ञ नीति प्रिय आर्य.....

### खीरे और दही से बना :-

खीरे के अन्दर का गूदा को दहीं में अच्छे से मिलाकर 20 मिनट तक लगाकर छोड़ दें, हल्का सूखने पर गुनगुने पानी से हल्का रगड़ कर धो लें। इससे त्वचा की तैलीय कोशिकायें रोमछिद्र सीबम को नियत्रंण में रखती है। और अन्दर पौषक तत्व मिल जाते हैं। इससे तैलीय त्वचा से छुटकारा मिलता है।

### खीरा, शहद और नींबू से बना :-

यह मिश्रण स्किन को अंदर से हाइड्रेट कर के ग्लो लाता है। इस पेस्ट को बनाने के लिये 4-5 चम्मच गाढा खीरे का पेस्ट लें और उसमें शहद और नींबू की कुछ बूंदे मिक्स कर दें। साथ ही पुदीने की कुछ पत्तियां लेकर उसे क्रश करें और उसके रस को भी इस पेस्ट में मिला दें। इस पेस्ट को अपने चेहरे पर 15-20 मिनट तक के लिये लगाए। यह उपचार रूखी त्वचा वालों के लिए काफी अच्छा होता है। पर अगर आपकी त्वचा तैलीय है तो इसमें मुल्तानी मिट्टी का मिश्रण कर लें। इससे आपकी रंगत भी निखरेगी।

# स्वास्थ्य चर्चा

# पेट दर्द के घरेलू उपाय

पेट दर्द एक आम समस्या है। इसके कई कारण हो सकते हैं। यदि आपको भी अक्सर पेट दर्द होता है तो दवा खाने के बजाए घरेलू उपाय अपनाएं, क्योंकि पेट दर्द के लिए ज्यादा दवा खाना आपके शरीर के लिए हानिकारक साबित हो सकता है। आइए जानते हैं पेट दर्द से छुटकारा पाने के लिए छः घरेलू नुस्खे....

1. अजवायन को तवे पर सेंक कर पीस लें। इस चूर्ण को आधी चम्मच मात्रा में लें और ठंडा पानी पी लें। पेट दर्द दूर हो जाएगा।
2. अदरक को बारीक काटकर गर्म पानी में उबाल लें, और पिएं, कब्ज या गैस के कारण हो रहे पेट दर्द में ऐसा करने से तुरंत आराम मिलता है।
3. जीरा भूनकर चबाने से भी पेट दर्द में राहत मिलती है।
4. गुनगुने पानी में नीबू को निचोंड कर पीने से भी पेट दर्द में लाभ मिलता है।
5. अजवायन के चूर्ण में काला नमक मिला कर गर्म पानी के साथ लेने से पेट की तकलीफ दूर हो जाती है।
6. सूखा अदरक चूसने से भी पेट दर्द में आराम होता है।

(हालांकि ये सभी घरेलू उपचार हैं फिर भी डॉक्टर से परामर्श ले लेना बेहतर होगा)

# संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां

बलरई (मथुरा) में आयोजित मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम कथा में उपस्थित श्रद्धालुओं को कथा श्रवण करातीं संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष कथाव्यास डा.अर्चना प्रिय आर्य जी तथा उपस्थित श्रोतागण।

बलरई में श्रीराम कथा के दौरान डा.अर्चना प्रिय आर्य जी को सम्मानित करते पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष मथुरा अनूप चौधरी जी।

श्रीराम कथा आयोजक श्री केशव सिंह पहलवान व श्रीमती राजेन्द्री देवी जी को सम्मान पत्र भेंट करतीं मिशन की अध्यक्ष व कथा व्यास डा.अर्चना प्रिय आर्य जी।

बलरई में हुई श्रीराम कथा को सुनने आये श्रोतागण तथा कथा का संचालन करते संस्कार जागृति मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य जी व व्यास पीठ पर बैठीं कथा व्यास श्रद्धेया डा.अर्चना प्रिय आर्य जी।

# संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां

बलरई में आयोजित श्रीराम कथा में डा.अर्चना प्रिय आर्य जी का स्वागत करते आयोजक तथा श्रद्धालुओं को कथा श्रवण करातीं श्रद्धेया बहिन जी।

सहायक आयुक्त पुलिस, दिल्ली श्री राज सिंह जी व श्रीमती सीमा सिंह जी को मिशन की संरक्षिका सरोज रानी आर्य जी द्वारा सम्मानित किया गया।

भरतपुर में श्रीराम कथा के लिए मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी को नारियल भेंट करते आयोजक।

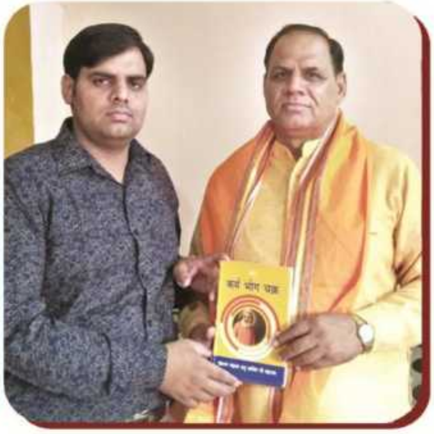

आचार्य सत्यप्रिय आर्य जी को पितृ दिवस पर साहित्य भेंट करते मिशन के सचिव विवेक प्रिय आर्य जी।

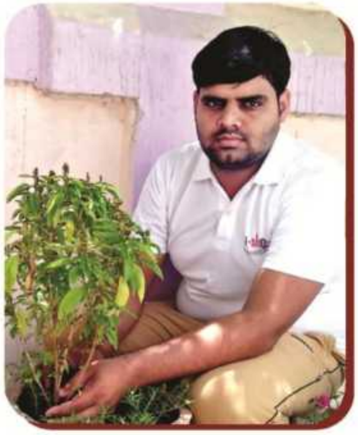

विश्व पर्यावरण दिवस पर वृक्षारोपण करते मिशन के सचिव विवेक प्रिय आर्य जी।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर ऊंचागांव में मिशन द्वारा संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य जी के सानिध्य में योग शिविर का अयोजन किया गया। जिसमें बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लिया।

# संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां मीडिया की नजरों में

18 जून 2019 — राजपथ मथुरा

## राम मंदिर तो बना नहीं परंतु जगह-जगह बने रम के मंदिर : डॉ. अर्चना

### बलरई में चल रही श्रीराम कथा का हुआ समापन

मथुरा, (राजपथ मथुरा ब्यूरो)। बलरई में चल रही मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम कथा के समापन पर कथा वाचिका संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि भगवान श्रीराम का मंदिर तो हम नहीं बना पाए लेकिन हर एक किमी पर रम के मंदिर स्थापित कर दिए हैं, जोकि बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है। उन्होंने कहा कि रावण की कैद में रहती हुई सीता को बिना उसकी सहमति के राक्षस रावण स्पर्श नहीं कर पाया परन्तु आज मेरे देश में महिलाएं सुरक्षित नहीं है। भगवान राम के भ्रातृ प्रेम का वर्णन करते हुए उन्होंने कहा कि राम चौदह वर्ष बाद विभीषण को लंका का राजा बनाकर जब वापस अयोध्या आये तो जो पहले भरत के विचार थे वही विचार तब मिले। उन्होंने अंत में कहा कि रामायण हमें त्याग भावना, भ्रातृ प्रेम, पितृ भक्ति और यज्ञ प्रेम सिखाती है, जिसे हमें अपने जीवन में उतारना चाहिए। इस दौरान कथा व्यास डॉ. आर्य द्वारा आयोजक केशव सिंह पहलवान व राजेन्द्री देवी को सम्मान पत्र भेंट कर उनका अभिनन्द किया। आयोजकों द्वारा भी कथा व्यास का शाल ओढ़ाकर स्वागत किया गया। प्रातःकाल यज्ञ आचार्य विपिन बिहारी आर्य ने किया तथा आभार आचार्य सत्यप्रिय आर्य द्वारा व्यक्त किया गया। कथा में प्रमुख रूप से विवेक प्रिय आर्य, महारूप सिंह, किशन सिंह आर्य, रघुवीर सिंह आर्य, शिव वर्मा, अरुण सिंह, भुवनेश आर्य, डॉ. अशोक कुंतल मनोरी, पीवी गौतम, भगवान देव वानप्रस्थी, राम बिहारी आर्य आदि मजूद रहे।

अमर उजाला — आगरा, रविवार, 16 जून 2019

## श्रीराम की कथा को जीवन में उतारें

**मथुरा।** बलरई में चल रही श्रीराम कथा में व्यासपीठ से संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा. अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि कथा को केवल सुनना ही नहीं चाहिए बल्कि उसे अपने जीवन में उतारना होगा तभी मानव कल्याण संभव होगा।

उन्होंने प्रभु श्रीराम और देवी सीता के विवाह का प्रसंग भी सुनाया। उन्होंने बताया कि अहंकारी के कारण कई राजा भगवान शिव के धनुष को हिला भी नहीं पाए थे। इस मौके पर कथा में पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष अनूप चौधरी, केसव सिंह पहलवान, आचार्य विपिन बिहारी, आचार्य सत्यप्रिय आर्य, विवेक प्रिय आर्य, महारूप सिंह, किशन सिंह आर्य, रघुवीर सिंह आर्य, भुवनेश पाल आर्य, भगवान देव वानप्रस्थी, अरुण सिंह मौजूद रहे। ब्यूरो

छोटी सी बात — मथुरा । मंगलवार । 18 जून 2019

## राम के मंदिर बना न पाए रम के मंदिर बना दिये

छोटी सी बात — मथुरा । बुधवार । 12 जून 2019

## यज्ञ से हुआ था भगवान श्रीराम का जन्म

मथुरा (छोटी सी बात)। श्री राम का जन्म ही यज्ञ के द्वारा हुआ था। उनके जन्म के लिए महाराज दशरथ ने श्रृंग ऋषि के ब्रह्मत्व में अथर्ववेद के मंत्रों से पुत्रेष्टि यज्ञ कराया था। श्रीराम का पूरा जीवन मर्यादा से युक्त था इसलिए आज लगभग साढ़े नौ लाख वर्ष बाद भी उन्हें याद करते हैं। उक्त बातें बलरई में चल रही श्रीराम कथा में कथा वाचिका संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने कहीं।

15 जून 2019 — राजपथ मथुरा

## श्रीराम ने शिव धनुष तोड रचाया सीता से विवाह

### चौथे दिन डा. अर्चना प्रिय ने राम सीता विवाह का सुनाया वर्णन, बलरई में चल रही श्रीराम कथा का 17 को होगा समापन

मथुरा, (राजपथ मथुरा ब्यूरो)। बलरई में चल रही मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम कथा के चौथे दिन राम विवाह प्रसंग पर प्रवचन दिया गया। इस बीच संगीतमय कथा पर श्रद्धालु भाव विभोर उठे। कथा वाचिका संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि कथा को केवल सुनना ही नहीं चाहिए... विफल रहे। ऐसे में राजा जनक ने सभा में कहा कि आज धरती वीरों से विहिन हो गया है, सभी अपने घर जाएं। इसके बाद लक्ष्मण को क्रोध आया और उन्होंने कहा कि अगर श्रीराम की आज्ञा हो तो धनुष उठाना तो क्या, उसे चूर चूर कर दूंगा। डा. अर्चना ने कहा कि धनुष अहंकार का प्रतीक है व राम ज्ञान का प्रतीक। जब व्यक्ति को ज्ञान का स्पर्श तब अहंकार का नाश हो... प्रातःकाल की बेला में आचार्य विपिन बिहारी द्वारा वैदिक विधि विधान से यज्ञ कराया गया। कथा में प्रमुख रूप से आचार्य सत्यप्रिय आर्य, विवेक प्रिय आर्य, महारूप सिंह, किशन सिंह आर्य, रघुवीर सिंह आर्य, भुवनेश पाल आर्य, भगवान देव वानप्रस्थी, अरुण सिंह सहित सैकड़ों श्रद्धालु मौजद रहे।

13 जून 2019 — राजपथ मथुरा

## यज्ञ से हुआ था भगवान श्रीराम का जन्मः डॉ. अर्चना

### बलरई में चल रही श्रीराम कथा का समापन 17 को

मथुरा, (राजपथ मथुरा ब्यूरो)। भगवान श्री राम का जन्म ही यज्ञ के द्वारा हुआ था। उनके जन्म के लिए महाराज दशरथ ने श्रृंग ऋषि के ब्रह्मत्व में अथर्ववेद के मंत्रों से पुत्रेष्टि यज्ञ कराया था। श्रीराम का पूरा जीवन मर्यादा से युक्त था इसलिए तो आज लगभग साढ़े नौ लाख वर्ष बाद भी उन्हें याद करते हैं। उक्त बातें बलरई में चल रही श्रीराम कथा में कथा वाचिका एवं संस्कार जागति मिशन की अध्यक्ष डॉ.

दैनिक जागरण — आगरा/मथुरा, 16 जून 2019

## कथा को केवल सुनना ही नहीं बल्कि जीवन में भी उतारना होगा

जासं, मथुराः बलरई में चल रही मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम कथा के चौथे दिन राम विवाह प्रसंग पर प्रवचन दिया गया। कथा वाचिका संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ.अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि कथा को केवल सुनना ही नहीं चाहिए बल्कि उसे अपने जीवन में उतारना होगा तभी मानव कल्याण संभव होगा।

मुख्य रूप से पहुंचे पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष अनूप चौधरी की ओर से व्यासजी का सम्मान किया गया और आयोजक केसव सिंह पहलवान द्वारा सपरिवार आरती की गयी। इससे पूर्व आचार्य विपिन बिहारी की ओर से वैदिक विधि विधान से यज्ञ कराया गया। आचार्य सत्यप्रिय आर्य, विवेक प्रिय आर्य, केशव सिंह पहलवान, महारूप सिंह, किशन सिंह आर्य, रघुवीर सिंह आर्य, भुवनेश पाल आर्य, भगवान देव वानप्रस्थी, अरूण सिंह सहित सैकड़ों श्रद्धालु मौजूद रहे।

छोटी सी बात — मथुरा । शनिवार । 15 जून 2019

## श्रीराम ने शिव धनुष तोड़कर रचाया सीता से विवाह

हिन्दुस्तान — आगरा • बुधवार • 19 जून 2019

## कथा में किया राम के भातृ प्रेम का वर्णन

**मथुरा।** बलरई में चल रही श्रीराम कथा के समापन पर कथा वाचिका संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने भगवान राम के भातृ प्रेम का वर्णन किया। कहा कि रामायण हमें त्याग भावना, भातृ प्रेम, यज्ञ प्रेम सिखाती है, उन्होंने आयोजक केशव सिंह पहलवान व राजेन्द्री देवी को सम्मान पत्र भेंट कर उनका अभिनन्द किया। आयोजकों द्वारा भी कथा व्यास का शाल ओढ़ाकर स्वागत किया गया। सुबह यज्ञ आचार्य विपिन बिहारी आर्य ने किया तथा आभार आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने व्यक्त किया।

हिन्दुस्तान — आगरा • रविवार • 16 जून 2019

## कथा जीवन में उतारने से होता है कल्याण

**मथुरा।** बलरई में चल रही राम कथा यज्ञ में व्यास संग संस्कार जागृति मिशन अध्यक्षा डा. अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि प्रभु की कथा को केवल सुनना ही नहीं चाहिए, बल्कि उसे अपने जीवन में उतारना होगा तभी मानव कल्याण संभव होगा। बताया राम विवाह आदर्श विवाह है। धनुष अहंकार का प्रतीक है व राम ज्ञान का प्रतीक। जब अहंकारी व्यक्ति को ज्ञान का स्पर्श होता है तब अहंकार का नाश हो जाता है। इस मौके पर पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष अनूप चौधरी ने व्यास का सम्मान किया और आयोजक केशव सिंह पहलवान ने आरती की। प्रातः आचार्य विपिन बिहारी ने विधिपूर्वक यज्ञ कराया।

अमर उजाला — आगरा, सोमवार, 10 जून 2019

## बलरई में श्रीराम कथा कल से

THE SEA EXPRESS — आगरा, सोमवार, 10 जून 2019

## बलरई में श्रीराम कथा की अमृत वर्षा 11 से

हिन्दुस्तान — आगरा • गुरुवार • 13 जून 2019

## मां कौशल्या बनें तो फिर राम पैदा होंगे

**मथुरा।** गांव बलरई में चल रही श्रीराम कथा में प्रवक्ता संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने कहा है कि भगवान राम को लाखों साल बाद भी भक्त याद करते हैं। श्रीराम की ...

18 जून 2019 — ब्रज गरिमा

राम के मंदिर बना न पाए रम के मंदिर बना दिये

## भगवान श्रीराम को बनाएं अपना आदर्श : डॅ.अर्चना प्रिय

दैनिक जागरण — आगरा/मथुरा, 10 जून 2019

## बलरई में श्रीराम कथा कल से

जासं, मथुराः रिफाइनरी क्षेत्र के गांव बलरई में 11 से 17 जून तक श्री राम कथा का आयोजन किया जा रहा है। आयोजक केशव सिंह पहलवान व महारूप सिंह ने बताया कि मंगलवार सुबह आठ बजे से कलश यात्रा निकाली जाएगी तथा दोपहर 12 बजे से डॉ. अर्चना प्रिय आर्य की मधुर वाणी में श्रीराम कथा का शुभारंभ होगा। 18 जून को भंडारा होगा। प्रतिदिन यज्ञ आर्य समाज के प्रधान विपिन बिहारी आर्य द्वारा कराया जाएगा। कथा श्रवण करने की अपील करने वालों में भुवनेश पाल आर्य, रघुवीर सिंह आर्य, शिव वर्मा आर्य आदि हैं।

आज — आगरा, 16 जून 2019

## श्रीराम ने शिव धनुष तोड़ रचाया सीता से विवाह

हिन्दुस्तान — आगरा • सोमवार • 10 जून 2019

## बलरई में श्रीराम कथा की अमृत वर्षा 11 से

**मथुरा।** मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के आदर्श एवं संचालन को जन-जन तक पहुंचाने के लिए रिफाइनरी क्षेत्र के गांव बलरई में डा.अर्चना प्रिय आर्य के मुखारविंद से 11 से 17 जून तक श्री राम कथा का आयोजन होगा।

आयोजक केशव सिंह पहलवान व महारूप सिंह ने बताया कि 11 जून मंगलवार को सुबह आठ बजे से कलश यात्रा निकाली जाएगी। और दोपहर 12 बजे से कथाकार डा. अर्चना प्रिय आर्य की मधुर वाणी से श्रीराम कथा का शुभारंभ होगा। 17 जून को कथा का समापन व 18 जून को भंडारे का आयोजन किया जाएगा। आर्य समाज के प्रधान विपिन बिहारी आर्य द्वारा प्रतिदिन यज्ञ कराया जाएगा। केशव सिंह पहलवान, भुवनेश पाल आर्य ने कार्यक्रम में आने की अपील की।

छोटी सी बात — मथुरा । रविवार । 09 जून 2019

## बलरई में श्रीराम कथा 11 से

मथुरा (छोटी सी बात)। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामजी के आदर्श एवं संचालन को जन-जन तक पहुंचाने के लिए रिफाइनरी क्षेत्र के गांव बलरई में 11 से 17 जून तक श्री राम कथा का आयोजन किया जा रहा है। आयोजकों द्वारा कथा की तैयारियों को अंतिम रूप दिया जा रहा है।

आगामी 11 जून मंगलवार को सुबह आठ बजे से कलश यात्रा निकाली जायेगी तथा दोपहर 12 बजे से प्रख्यात कथाकार डा.अर्चना प्रिय आर्य की मधुर वाणी में श्रीराम कथा का शुभारंभ होगा। 17 जून को कथा का समापन व 18 जून को भण्डारा का आयोजन किया जायेगा। प्रतिदिन यज्ञ आर्य समाज के प्रधान विपिन बिहारी आर्य द्वारा कराया जायेगा। कथा श्रवण करने की अपील करने वालों में प्रमुख रूप से केशव सिंह पहलवान, भुवनेश पाल आर्य, रघुवीर सिंह आर्य, महारूप सिंह, शिव वर्मा आर्य आदि हैं।

आज — आगरा, 10 जून 2019

## बलरई में श्रीराम कथा की अमृत वर्षा 11 से

मथुरा। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामजी के आदर्श एवं संचालन को जन-जन तक पहुंचाने के लिए रिफाइनरी क्षेत्र के गांव बलरई में डा.अर्चना प्रिय आर्य के मुखारविंद से 11 से 17 जून तक श्री राम कथा का आयोजन किया जा रहा है। आयोजकों द्वारा कथा की तैयारियों को अंतिम रूप दिया जा रहा है। आयोजक केशव सिंह पहलवान व महारूप सिंह ने बताया कि 11 जून मंगलवार को सुबह आठ बजे से कलश यात्रा निकाली जायेगी तथा दोपहर 12 बजे से प्रख्यात कथाकार डा.अर्चना प्रिय आर्य की मधुर वाणी में श्रीराम कथा का शुभारंभ होगा। 17 जून को कथा का समापन व 18 जून को भण्डारा का आयोजन किया जायेगा। प्रतिदिन यज्ञ आर्य समाज के प्रधान विपिन बिहारी आर्य द्वारा कराया जायेगा। कथा श्रवण करने की अपील करने वालों में प्रमुख रूप से केशव सिंह पहलवान, भुवनेश पाल आर्य, रघुवीर सिंह आर्य, महारूप सिंह, शिव वर्मा आदि हैं।

09 जून 2019 — राजपथ मथुरा

## बलरई में 11 जून से होगी श्रीराम कथा की अमृत वर्षा

डा. अर्चना प्रिय आर्य

मथुरा, (राजपथ मथुरा ब्यूरो)। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामजी के आदर्श एवं संचालन को जन-जन तक पहुंचाने के लिए रिफाइनरी क्षेत्र के गांव बलरई में डा. अर्चना प्रिय आर्य के मुखारविंद से 11 से 17 जून तक श्री राम कथा का आयोजन किया जा रहा है। आयोजकों द्वारा कथा की तैयारियों को अंतिम रूप दिया जा रहा है। आयोजक केशव सिंह पहलवान व महारूप सिंह ने बताया कि 11 जून मंगलवार को सुबह आठ बजे से कलश यात्रा निकाली जायेगी तथा दोपहर 12 बजे से प्रख्यात कथाकार डा. अर्चना प्रिय आर्य की मधुर वाणी में श्रीराम कथा का शुभारंभ होगा। 17 जून को कथा का समापन व 18 जून को भण्डारा का आयोजन किया जायेगा। प्रतिदिन यज्ञ आर्य समाज के प्रधान विपिन बिहारी आर्य द्वारा कराया जायेगा। कथा श्रवण करने की अपील करने वालों में प्रमुख रूप से केशव सिंह पहलवान, भुवनेश पाल आर्य, रघुवीर सिंह आर्य, महारूप सिंह, शिव वर्मा आर्य आदि हैं।

18 जून 2019 — ब्रज गरिमा

## श्रीराम कथा की अमृत वर्षा बलरई में 11 से

मथुरा, मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामजी के आदर्श एवं संचालन को जन-जन तक पहुंचाने के लिए रिफाइनरी क्षेत्र के गांव बलरई में डा.अर्चना प्रिय आर्य के मुखारविंद 11 से 17 जून तक श्री राम कथा का आयोजन किया जा रहा है। आयोजकों द्वारा कथा की तैयारियों को अंतिम रूप दिया जा रहा है। आयोजक केशव सिंह पहलवान महारूप सिंह ने कहा कि 11 जून मंगलवार को सुबह आठ बजे से कलश यात्रा निकाली जायेगी तथा दोपहर 12 बजे से प्रख्यात कथाकार डा.अर्चना प्रिय आर्य की मधुर वाणी श्रीराम कथा का शुभारंभ होगा। 17 जून को कथा का समापन व 18 जून को भण्डारा आयोजन किया जायेगा। प्रतिदिन यज्ञ आर्य समाज के प्रधान विपिन बिहारी आर्य द्वारा कराया जायेगा।

# संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां मीडिया की नजरों में

**अमर उजाला** आगरा | शुक्रवार, 21 जून 2019

## स्वस्थ जीवन जीने का आधार है योग

**मथुरा।** आर्य समाज के वरिष्ठ प्रचारक और संस्कार जागृति मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने योग दिवस के उपलक्ष्य में योग की महिमा बताते हुए कहा कि योग शब्द के दो अर्थ हैं और दोनों ही महत्वपूर्ण हैं। पहला है. जोड़ और दूसरा है समाधि।

5 जून 2019 **ब्रज गरिमा**

## वृक्षारोपण के साथ संरक्षण भी आवश्यक : विवेक प्रिय

मथुरा। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर संस्कार जागृति मिशन के सचिव विवेक प्रिय आर्य द्वारा वृक्षारोपण किया गया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि वृक्ष हमारे लिए बहुत उपयोगी हैं, हवा को शुद्ध रखते हैं और विषैली गैसों को समाप्त करते हैं। वृक्ष हमें कई प्रकार के लाभ पहुंचाते हैं। हवा, पानी और मिट्टी का प्रदूषण वृक्षों की बढ़ोत्तरी से ही सम्भव है। आर्य ने कहा कि यदि हम अपनी सभ्यता और संस्कृति की रक्षा करना चाहते हैं तो हमें न केवल अधिक से अधिक वृक्ष लगाने चाहिए बल्कि उनका पालन, पोषण और संरक्षण भी करना चाहिए। उन्होंने कहा कि 'वृक्ष कबऊ न फल चखे, नदी न सचैं नीर' वृक्ष अपने फल को खुद कभी नहीं चखते हैं और न ही नदी अपने जल को खुद पीती है बल्कि परमार्थ के लिए ही अपने फल और नीर को समर्पित करते हैं। इस अवसर पर मिशन के कार्यकर्ताओं द्वारा जगह-जगह वृक्षारोपण कर उनके संरक्षण का संकल्प लिया गया।

**राजस्थान पत्रिका** . भरतपुर, शुक्रवार, 21 जून, 2019 .

## श्री राम कथा 29 से

भरतपुर. मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम कथा 29 जून से 5 जुलाई तक कंजोली लाइन में होगी। कथावाचन आचार्य डॉ. अर्चना प्रिय आर्य द्वारा होगा। जिला आर्य उपसभा के मंत्री सत्यदेव आर्य ने बताया कि सुबह आठ बजे से यज्ञ होगा।

**दैनिक भास्कर** भरतपुर, शुक्रवार, 21 जून, 2019

## रामकथा 29 जून से

भरतपुर| जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा द्वारा कंजोली लाइन में श्रीराम कथा का आयोजन 29 जून से 5 जुलाई तक किया जाएगा। कथा प्रवक्ता आचार्य डॉ. अर्चना प्रिय आर्य होंगी। जिला आर्य उप मंत्री सभा के मंत्री सत्यदेव आर्य ने बताया कि कथा से पूर्व सुबह 8 बजे से यज्ञ होगा तथा दोपहर एक बजे से कथा प्रारंभ होगी।

**THE SEA EXPRESS** आगरा, गुरुवार, 06 जून 2019

## पौधारोपण के साथ संरक्षण भी आवश्यकः विवेक प्रिय

...। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर ...स्कार जागृति मिशन के सचिव विवेक आर्य द्वारा वृक्षारोपण किया गया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि वृक्ष हमारे लिए बहुत उपयोगी हैं, हवा को शुद्ध रखते हैं और विषैली गैसों को समाप्त करते हैं। वृक्ष हमें कई प्रकार के लाभ पहुंचाते हैं। हवा, पानी और मिट्टी का प्रदूषण वृक्षों की बढ़ोत्तरी से ही सम्भव है। श्री आर्य ने कहा कि यदि हम अपनी सभ्यता और संस्ति की रक्षा करना चाहते है तो हमें न केवल अधिक से अधिक वृक्ष लगाने चाहिए बल्कि उनका पालन, पोषण और संरक्षण भी करना चाहिए। उन्होंने कहा कि 'वृक्ष कबऊन फल चखे, नदी न सचें नीर' वृक्ष अपने फल को खुद कभी नहीं चखते है और न ही नदी अपने जल को खुद पीती है बल्कि परमार्थ के लिए ही अपने फल और नीर को समर्पित करते हैं। इस अवसर पर मिशन के कार्यकर्ताओं द्वारा जगह-जगह वृक्षारोपण कर उनके संरक्षण का संकल्प लिया गया।

16 जून 2019 **राजपथ मथुरा**

## पितृ दिवस पर किया पिता का सम्मान

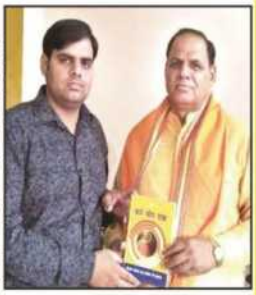

मथुरा, (राजपथ मथुरा ब्यूरो)। पितृ दिवस के अवसर पर संस्कार जागृति मिशन के सचिव विवेक प्रिय आर्य द्वारा पिता सत्यप्रिय आर्य का दुपट्टा पहनकर स्वागत किया गया और कर्म भोग चक्र नामक पुस्तक भी स्वाध्याय हेतु भेंट की। इस अवसर पर सचिव श्री आर्य ने कहा कि पितृ दिवस केवल एक ही दिन न मानकर हर दिन व समय माता पिता की सेवा करनी चाहिए। शास्त्रों में पिता का दर्जा आकाश से ऊंचा बताया गया है। इस अवसर पर मिशन अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य भी मौजूद रहीं।

**छोटी सी बात** मथुरा | शुक्रवार | 21 जून 2019

## नियमित योग का दिलाया संकल्प

**मथुरा (छोटी सी बात)।** अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर संस्कार जागृति मिशन ने देहात क्षेत्र में शिवर लगाकर योग, आसन व प्रणायाम कराकर ग्रामीणों को स्वस्थ्य रहने के सूत्र बताये। ऊंचागांव में संस्कार जागृति मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य के सानिध्य में लगाये गये योग शिविर में ग्रामीणों ने बढ़चढ़ कर भाग लिया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि योग व्यक्ति को बीमारियों से तो दूर रखता ही है साथ में सोच को भी सकारात्मक बनाता है। उन्होंने कहा कि यम नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याआहार, धारणा, ध्यान, तथा समाधि योग के आठ अंग हैं। उन्होने कहा कि आज के समय में लोग गलत खानपान और रहन सहन की वजह से अनेकों बीमारियों से ग्रस्त हैं। मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि आज कोई भी घर ऐसा नहीं है जिसमें कोई व्यक्ति बीमार ना हो। कहा जाता है कि स्वस्थ तन में ही स्वस्थ मन का निवास होता है। उन्होंने उपस्थित जनों को नियमित योगाभ्यास करने का संकल्प भी दिलाया। शिविर में प्रमुख रूप से डश्व.अर्चना प्रिय आर्य, विवेक प्रिय आर्य, विकास ओम आर्य, प्रियव्रत ओम आर्य, प्रियंका आर्य, नीति प्रिय आर्य, सुषमा सिंह, सत्यवती देवी, सरोज रानी, उत्कर्ष प्रताप सिंह, प्रिया आर्य, मयंक चाहर, देवांश आदि मौजूद रहे।

**छोटी सी बात** मथुरा | गुरूवार | 20 जून 2019

## योग का अर्थ है परमात्मा से मिलन

**मथुरा (छोटी सी बात)।** आर्य समाज के वरिष्ठ प्रचारक और संस्कार जागृति मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में योग की महिमा बताते हुए कहा कि योग शब्द के दो अर्थ हैं और दोनों ही महत्वपूर्ण हैं। पहला है- जोड़ और दूसरा है समाधि। जब तक हम स्वयं से नहीं जुड़ते, समाधि तक पहुंचना असंभव होगा। योग का अर्थ परमात्मा से मिलन है। योग से तन व मन निरोगी बनता है। यह स्वस्थ जीवन जीने का आधार है। उन्होंने कहा कि योग आध्यात्म से जुड़ा है और प्राचीन काल से योग के चलन के चलते समाज संगठित और सद्व्यवहारी था, लेकिन बदलते परिवेश में योग की महत्ता कम होने का कारण ही समाज में उत्पन्न बिखराव की स्थिति है। उन्होंने कहा कि योग को हमें अपने जीवन का अंग बना बना लेना चाहिए। यह जिंदगी जीने का सलीका है, इसके बिना जिंदगी नीरस है। आचार्य ने कहा कि ईश्वर के ज्ञान, दर्शन और मिलन के लिए जो कुछ किया जाता है उस सधे हुए प्रयत्न का नाम योग है।

21 जून 2019 **ब्रज गरिमा**

## संस्कार जागृति मिशन ने देहात में लगाया योग शिविर

मथुरा, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर संस्कार जागृति मिशन ने देहात क्षेत्र में शिवर लगाकर योग, आसन व प्रणायाम करा कर ग्रामीणों को स्वस्थ्य रहने के सूत्र बताये

ऊंचागांव में संस्कार जागृति मिशन के संरक्षक अचार्य सत्यप्रिय आर्य के सानिध्य में लगाये गये योग शिविर में ग्रामीणों ने बढ़चढ़ कर भाग लिया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि योग व्यक्ति को बीमारियों से तो दूर रखता ही है साथ में सोच को भी सकारात्मक बनाता है। उन्होंने कहा कि यम नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याआहार, धारणा, ध्यान, तथा समाधि योग के आठ अंग हैं। उन्होने कहा कि आजके समयमें लोग गलत खानपान और रहन सहन की वजह से अनेकों बीमारियों से ग्रस्त हैं। मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि आज कोई भी घर ऐसा नहीं है जिसमें कोई व्यक्ति बीमार ना हो। कहा जाता है कि स्वस्थ तन में ही स्वस्थ मनका निवास होता है। जब हमारा तन ही स्वस्थ नहीं होगा तो हम खुश कैसे रह पाएंगे। उन्होंने उपस्थित जनों को नियमित योगाभ्यास करनेका संकल्प भी दिलाया शिविर में प्रमुख रूप से डॉ. अर्चना प्रिय आर्य, विवेक प्रिय आर्य, विकास ओम आर्य, प्रियव्रत ओम आर्य, प्रियंका आर्य, नीति प्रिय आर्य, सुषमा सिंह, सत्यवती देवी, सरोज रानी, उत्कर्ष प्रताप सिंह, प्रिया आर्य, मयंक चाहर, देवांश आदि मौजूद रहे।

संस्कार जागृति मिशन द्वारा ऊंचागांव में लगाये गये योग शिविर में भाग लेती महिलाएं व बच्चे।

20 जून 2019 **ब्रज गरिमा**

## योग का अर्थ है परमात्मा से मिलन

❑ सत्यप्रिय आर्य

मथुरा, आर्य समाज के वरिष्ठ प्रचारक और संस्कार जागृति मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में योग की महिमा बताते हुए कहा कि योग शब्द के दो अर्थ हैं और दोनोंही महत्वपूर्णहैं। पहला है-जोड़ और दूसरा हैसमाधि। जबतकहम स्वयंसे नहीं जुड़ते, समाधितक पहुंचनाअसंभव होगा। योग का अर्थ परमात्मा से मिलन है। योग से तन व मन निरोगी बनता है। यह स्वस्थ जीवन जीने का आधार है।

उन्होंने कहा कि योग आध्यात्म से जुड़ा है और प्राचीन काल से योग के चलन के चलते समाज संगठित और सद्व्यवहारी था लेकिन बदलते परिवेश में योग की महत्ता कम होने का कारण ही समाज में उत्पन्न बिखराव की स्थिति है। उन्होंने कहा कि योग को हमें अपने जीवन का अंग बना बना लेना चाहिए। यह जिंदगी जीने का सलीका है. इसके बिना जिंदगी नीरस है। आचार्य ने कहा कि ईश्वर के ज्ञान, दर्शन और मिलन के लिए जो कुछकिया जाताहै उस सधे हुए प्रयत्न का नाम योग है। जो कोई दृढ़व्रती होकर विधिपूर्वक उत्साह, प्रेम, प्रसन्नता, श्रद्धा, विश्वास और संयम सहित प्रयत्न करता है उसे योगी कहते हैं। उन्होंने कहा कि योग एक प्राचीन भारतीय जीवन पद्धति है, जिसमें शरीर, मन और आत्मा को एक साथ लाने का काम होता है।

**हिन्दुस्तान** आगरा • शुक्रवार • 21 जून 2019

## योग स्वस्थ्य जीवन का आधार : आचार्य सत्यप्रिय

मथुरा। आर्य समाज के वरिष्ठ प्रचारक और संस्कार जागृति मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में योग की महिमा बतायी।

**आज** 06 जून 2019 आगरा

## वृक्षारोपण के साथ संरक्षण भी आवश्यक- विवेक प्रिय

मथुरा। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर संस्कार जागृति मिशन के सचिव विवेक प्रिय आर्य द्वारा वृक्षारोपण किया गया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि वृक्ष हमारे लिए बहुत उपयोगी हैं, हवा को शुद्ध रखते हैं और विषैली गैसों को समाप्त करते हैं। वृक्ष हमें कई प्रकार के लाभ पहुंचाते हैं। हवा, पानी और मिट्टी का प्रदूषण वृक्षों की बढ़ोत्तरी से ही सम्भव है। श्री आर्य ने कहा कि यदि हम अपनी सभ्यता और संस्कृति की रक्षा करना चाहते हैं तो हमें न केवल अधिक से अधिक वृक्ष लगाने चाहिए बल्कि उनका पालन, पोषण और संरक्षण भी करना चाहिए। उन्होंने कहा कि 'वृक्ष कबऊ न फल चखे, नदी न सचें नीर' वृक्ष अपने फल को खुद कभी नहीं चखते हैं और न ही नदी अपने जल को खुद पीती है बल्कि परमार्थ के लिए ही अपने फल और नीर को समर्पित करते हैं। इस अवसर पर मिशन के कार्यकर्ताओं द्वारा जगह-जगह वृक्षारोपण कर उनके संरक्षण का संकल्प लिया गया।

05 जून 2019 **राजपथ मथुरा**

## वृक्षारोपण के साथ संरक्षण भी आवश्यकः विवेक प्रिय

मथुरा, (राजपथ मथुरा ब्यूरो)। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर संस्कार जागृति मिशन के सचिव विवेक प्रिय आर्य द्वारा वृक्षारोपण किया गया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि वृक्ष हमारे लिए बहुत उपयोगी हैं, हवा को शुद्ध रखते हैं और विषैली गैसों को समाप्त करते हैं। श्री आर्य ने कहा कि यदि हम अपनी सभ्यता और संस्कृति की रक्षा करना चाहते हैं तो हमें न केवल अधिक से अधिक वृक्ष लगाने चाहिए बल्कि उनका पालन, पोषण और संरक्षण भी करना चाहिए। उन्होंने कहा कि 'वृक्ष कबऊ न फल चखे, नदी न सचें नीर' वृक्ष अपने फल को खुद कभी नहीं चखते हैं और न ही नदी अपने जल को खुद पीती है बल्कि परमार्थ के लिए ही अपने फल और नीर को समर्पित करते हैं। इस अवसर पर मिशन के कार्यकर्ताओं द्वारा जगह-जगह वृक्षारोपण कर उनके संरक्षण का संकल्प लिया गया।

**हिन्दुस्तान** आगरा • गुरुवार • 06 जून 2019

**विश्व पर्यावरण दिवस पर किया पौधरोपणः मथुरा।** विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर संस्कार जागृति मिशन की ओर से पौधरापेण किया गया। इस अवसर पर सचिव विवेक प्रिय आर्य ने एक पौधा रोपकर इसका महत्व बताया। इस अवसर पर मिशन के कार्यकर्ताओं द्वारा जगह-जगह वृक्षारोपण कर उनके संरक्षण का संकल्प लिया गया।

**हिन्दुस्तान** आगरा • शनिवार • 22 जून 2019

**संस्कार जागृति मिशन** ने ऊंचागांव में शिविर लगाकर योग, आसन व प्रणायाम कराकर ग्रामीणों को स्वस्थ्य रहने के सूत्र बताए।

**छोटी सी बात** मथुरा | बुधवार | 05 जून 2019

## विश्व पर्यावरण दिवस पर किया वृक्षारोपण

**मथुरा (छोटी सी बात)।** विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर संस्कार जागृति मिशन द्वारा वृक्षारोपण किया गया। सचिव विवेक प्रिय आर्य ने कहा कि वृक्ष हमारे लिए बहुत उपयोगी हैं, हवा को शुद्ध रखते हैं और विषैली गैसों को समाप्त करते हैं। वृक्ष हमें कई प्रकार के लाभ पहुंचाते हैं। हवा, पानी और मिट्टी का प्रदूषण वृक्षों की बढ़ोत्तरी से ही सम्भव है। यदि हम अपनी सभ्यता और संस्कृति की रक्षा करना चाहते हैं तो हमें न केवल अधिक से अधिक वृक्ष लगाने चाहिए बल्कि उनका पालन, पोषण और संरक्षण भी करना चाहिए।

# ''संस्कार जागृति मिशन'' का साहित्य

(संस्कार जागृति मिशन के संरक्षक **आचार्य सत्यप्रिय आर्य जी** व अध्यक्ष **डा.अर्चना प्रिय आर्य जी** द्वारा लिखित साहित्य की श्रृंखला, जोकि अभी केवल ऑनलाइन ही प्राप्त की जा सकती हैं। भविष्य में इन्हें प्रकाशित किया जायेगा। इसमें आप सभी अपना सहयोग प्रदान कर सकते हैं।)

1. मनुज द्विज बनते हैं, संस्कारों से।
2. संस्कार पद्धति द्वारा मानव का निर्माण।
3. संस्कारों द्वारा मानव के नव निर्माण के दृष्टान्त।
4. संस्कारों की पुण्य-परम्परा।
5. संस्कारों का प्रचलन अपने घर से।
6. वर्णाश्रम और संस्कार।
7. वेद और संस्कार।
8. गृहसूत्र और संस्कार।
9. ब्राह्मण ग्रन्थ और संस्कार।
10. उपनिषद और संस्कार।
11. सत्यार्थ प्रकाश और संस्कार।
12. रामायण और संस्कार।
13. पुराण और संस्कार।
14. संस्कारों का वैज्ञानिक स्वरुप।
15. संस्कारों की विज्ञान सम्मत प्रक्रिया।
16. बेटे-बेटियों में भेदभाव क्यों?
17. दया का सागर स्वामी दयानंद।
18. संसार का प्रथम गृहस्थ आर्य था।
19. मैं क्या हूं?
20. संस्कार जागृति पद्धति।
21. संस्कारों का महत्व
22. मानव निर्माण में संस्कारों का वैज्ञानिक प्रयत्न
23. हमारे सोलह संस्कार
24. हिन्दू धर्म में संस्कारों का महत्व
25. देव मानव गढ़ देने वाले ये विलक्षण संस्कार
26. यज्ञ और संस्कार
27. स्मृति और संस्कार।
28. चरक और संस्कार।
29. दर्शन और संस्कार।
30. संस्कार विधि और संस्कार।
31. गीता और संस्कार।
32. महाभारत और संस्कार।
33. मानव जीवन में संस्कारों का औचित्य।
34. संस्कारों की वर्तमानकालीन प्रासंगिकता।
35. मानसिक चिकित्सा की प्रखर पद्धति।
36. बेटी नहीं होगी तो सृष्टी नहीं होगी।
37. देश की स्वतंत्रता में वीरों का योगदान।
38. मादक दृव्य पदार्थ और हमारा स्वास्थ्य।
39. सृष्टि व्युत्पत्ति कैसे?
40. संस्कारित विचार।

## मनोनयन

'संस्कार जागृति मिशन' की एक आवश्यक बैठक 05 मई 2019 को प्रधान कार्यालय ताराधाम कॉलोनी (मथुरा) में आयोजित हुई। जिसमें सभी की सहमति से चंदनवन कॉलोनी, मथुरा निवासी चौ.लाल सिंह आर्य (जावरे वाले) को प्रचारक मनोनीत किया गया। जिसका एक मत से सभी सदस्यों ने समर्थन किया। लाल सिंह आर्य पूर्व में भारतीय सेना में भी अपनी सेवा दे चुके हैं और निरंतर समाजसेवा व धार्मिक कार्यों में कार्य करते हैं।

चौ.लाल सिंह आर्य

इस दौरान सचिव विवेक प्रिय आर्य ने मनोनीत पत्र उन्हें सौंपा। इस अवसर पर लाल सिंह ने कहा कि संस्कार जागृति मिशन द्वारा जो कार्य किये जा रहे हैं, उन्हें निरंतर आगे बढ़ाने में अपना सहयोग प्रदान करता रहुंगा। बैठक की अध्यक्षता अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य व संचालन सत्यप्रिय आर्य ने किया।

संस्कार जागृति मिशन

!! ओ३म् !!

''संस्काराद् द्विज उच्यते''

(संस्कारों से परिष्कृत मनुष्य ही द्विज कहलाते हैं)

# संस्कार जागृति मिशन

## एक कदम संस्कारों की ओर

'संस्कार जागृति मिशन' एक ऐसा प्रयास है जो भारतीय संस्कृति व संस्कारों को पुनः जागृत करने में अहम भूमिका निभा रहा है।

# घरों में यज्ञ व बच्चों के संस्कार करायें

बच्चों के जन्मदिन, बुजर्गों की पुण्यतिथि व त्यौहारों पर अपने घरों पर दुनिया का सर्वश्रेष्ठ कर्म 'यज्ञ' करायें तथा अपने बच्चों के सभी संस्कार करा कर उन्हें संस्कारवान बनायें।

## वैदिक रीति से संस्कार व यज्ञ करवाने के लिए सम्पर्क करें

सम्पर्क सूत्र : 09719910557, 09719601088, 09058860992, 08218692727

ई-मेल : sanskarjagratimission@gmail.com

SanskarJagratiMission

Sanskar Jagrati TV

धार्मिक खबर, भजन, प्रवचन, योग, संस्कार समागम तथा संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां देखने को YouTube पर संस्कार जागृति टीवी चेनल को सबस्काइब करें।